अनारको की दुनिया के सात अजूबे

सतीनाथ षडंगी

खाने की छुट्टी हो चुकी थी। दोपहर एक बजे का समय था। बाहर हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। धुँधलके में बाहर की दुनिया जैसे छोटी हो गई हो। अन्दर कक्षा में सामान्य ज्ञान की परीक्षा हो रही थी। प्रश्न पत्र के पाँचवें प्रश्न में पूछा गया था – दुनिया के सात मानवनिर्मित अजूबों के बारे में विस्तार से लिखें।

अनारको ने पेंसिल की नोक को यूँ ही मुँह में डाला और सोचने लगी। प्रश्न में कौन-सी दुनिया की बात कही गई है यह स्पष्ट नहीं था। किताबों में दुनिया के जिन अजूबों की बात कही गई है उनमें "अपना ताजमहल" भी शामिल है। हम यह सोचकर भले ही खुश हो जाएँ पर सच यह है कि किताबों के सात अजूबों में कुछ वाहियात किस्म के ढाँचे भी शामिल हैं। दूसरी बात यह कि ये सात अजूबे दुनिया के लोगों से पूछकर तो तय नहीं हुए हैं। दुनिया के 220 देशों में इंसान के बनाए कितने ही ढाँचे होंगे, लेकिन एक ही देश अमरीका के दो-दो "अजूबे" इसमें शामिल हैं। और उनमें से एक तो कोई अजूबा है ही नहीं – बस एक सीधा खम्भा भर है जो न दिमाग में, न मन में, न दिल में कोई हरकत पैदा करता है।

खैर, प्रश्न में यह भी नहीं लिखा गया है कि किताबों में लिखी और रटी बात ही लिखनी है। अनारको ने सोचा मैं उन सात अजूबों की बात लिखती हूँ जिन्हें मैं देखती हूँ तो देखती ही रह जाती हूँ – ये मेरी दुनिया के सात अजूबे हैं। ऐसा नहीं है कि इनमें से कोई नम्बर-वन है। ये सभी एक जैसी जादू भरी और एक जैसी मामूली चीज़ें हैं।

चित्रः अतनु राय

1. पगड़ी: तौलिए से बस थोड़ी-सी बड़ी! इस कपड़े के जाने कितने अलग-अलग अजब इस्तेमाल देखते हुए मैंने साल-महीने बिताए हैं। दरबान चाचा की पगड़ी उन्हें न सिर्फ धूप, बारिश और ठण्ड से बचाती है, बल्कि मक्खियों को भगाने, पसीना पोंछने, नहाने, बिछाकर लेटने, कमर बाँधने, बुखार में ठण्डे पानी की पट्टी रखने, मोच लगने पर गर्म पत्ते बाँधने के काम आती है। और उन पर फबती भी क्या खूब है!

2. माचिस: माचिस ऽऽऽऽऽ, बोलो तो जलते अँगारों पर टपकती बूँदों का-सा अहसास होता है। मुट्ठी में आग, जिसके बारे में सैकड़ों, हज़ारों, लाखों सालों तक इन्सान बस सपने देखता रहा था। डिब्बे की एक-एक तीली जैसे हाथ से गढ़ी गई हो। एक-एक तीली चौकोर चौकस सिपाही-सी। ऊँची-ऊँची टोपियाँ जैसे हरेक के सर की नाप लेकर बनाई गई हों। 50 पैसे की एक डिबिया में एक-दो नहीं, 40-50 गर्म-दिमाग सिपाही आपकी मुट्ठी में।

3. घड़ा: करीब-करीब हर घर में रहने वाला घड़ा या सुराही भी अपने आप में एक अजूबा है। यह पीने के पानी को कुछ और ही बना देता है। हज़ारों-लाखों-करोड़ों छोटे-छोटे छेद होते हैं इसमें। इनसे पानी रिसता है, बाहर की गर्मी और हवा से भाप बनकर हवा में मिल जाता है। लगता है जैसे पानी का एक हिस्सा शहीद होकर पानी के दूसरे हिस्से में ठण्डक पैदा करता है। गर्मी जितनी ज़्यादा हो पानी उतना ही ठण्डा होता जाता है।

4. साइकिल: खड़ी करो तो दो पहियों पर टिक न सके और चलाओ तो बस चलती ही जाए! इधर पैडल दबाया, उधर बीच में चक्की-सी चली, चेन खिंची और पीछे का पहिया भी घूमने लगा। और हैण्डल का ब्रेक दबाया तो एक तार खिंचा और पहिया थम गया। सब कुछ इतना सरल! यही सरलता तो इसे अजूबा भी बनाती है। इसके भी अलग-अलग इस्तेमाल पर लिखें तो पगड़ी से कहीं लम्बी कहानी बन जाएगी।

5. किताब: किताबें भी कम अजूबी नहीं हैं। सब किताबें तो नहीं पर कभी-कभार ऐसी कोई किताब हाथ लग ही जाती है जो बित्ते भर की होकर भी तमाम दुनिया और उसके बाहर तक का सफर करा लाती है। बेजान किताबों ने जाने कितनों की जानें ली हैं और कितनों में नई जान फूँक दी है। किताबों के बल पर हुकूमतें कायम होती और गिराई जाती रही हैं।

6. प्रेशर कुकर: प्रेशर कुकर कितने अलग-अलग तरह के होते हैं। कोई रेलगाड़ी की तरह छुक-छुक करता है, कोई चीनी ड्रैगन जैसी आवाज़ निकालता है, किसी में फुलझड़ी-सी सीटी बजती है और कोई चुपचाप अपना काम करता जाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इन सबमें खाना ऐसे पकता है जैसे कोई जादू हो गया हो। पकाना न आता हो तो भी इस जादू के बर्तन में कुछ सब्ज़ी, कुछ दाल, थोड़ा नमक, थोड़ी मिर्च, कुछ मसाले डालकर चढ़ा दो बस। थाली, कटोरी निकालते-निकालते कुछ खाने लायक बन ही जाता है।

7. पेंसिल: पेंसिल भी बड़ी करामाती चीज़ है। कुछ साल पहले अमरीका के वैज्ञानिकों ने अन्तरिक्ष यात्रियों के लिए पेन बनाने में करोड़ों डॉलर खर्च कर दिए थे। गुरुत्वाकर्षण बल न होने से वहाँ पेन की स्याही नीचे नहीं आती थी इसलिए खास पेन बनाना पड़ा था। दूसरी तरफ रूस के वैज्ञानिकों ने अपने देश के अन्तरिक्ष यात्रियों के हाथ में बस पेंसिल पकड़ा दी। न स्याही का झंझट और न गुरुत्वाकर्षण बल का लफड़ा। आसमानों की सैर करो और दास्ताने-सैर पेंसिल से लिखते जाओ। सुनते हैं कि एक पेंसिल से 35 किलोमीटर लम्बी लाइन लिख सकते हैं। पर सिर्फ लिखने के लिए कोई लिखता थोड़े ही है!